ऋग्वेद

वर्ष-११ अंक-९
२७ मई २०१५

ओ३म्

यजुर्वेद

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2015-17
एक प्रति- २०-०० रु.

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

सामवेद

अथर्ववेद

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्
वैदिक-रवि
मासिक

वर्ष-११ अंक-०९

२७ मई २०१५
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११६
विक्रम संवत् २०७२
दयानन्दाब्द १९०

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक
मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता
एक प्रति- २०-०० रू.
वार्षिक-२००-०० रू.
आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	-४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

क्र. विषय	पृष्ठ
संपादकीय	4
महर्षि कणाद	7
महर्षि दयानन्द ग्रंथ परिचय	8
आर्यावर्त देश	11
नेपोलियन और बालक लेनार्ड	12
आजादी की बुनियाद	13
अपने पेरिस से प्यार करता हूं	16
महर्षि दयानन्द	18
एक दृष्टि में मनुष्य	19
न्यूजीलैण्ड – आस्ट्रेलिया – फिजी यात्रा	21

जून माह के पर्व त्यौहार एवं जयंती

3 जून कबीर जयंती

5 जून विश्व पर्यावरण दिवस

6 जून बिरसा मुण्डा शहीद दिवस

13 जून उद्यम सिंह शहीद दिवस

16 जून महाराजा दाहरसिंह शहीद दिवस

18 जून महारानी लक्ष्मीबाई बलिदान दिवस

24 जून रानी दुर्गावती बलिदान दिवस

26 जून अंतर्राष्ट्रीय नशा निरोध दिवस

सम्पादकीय :

जातिवाद सनातन नहीं मनुष्य की देन है

दुनिया का इक रंगी आलम आम था
पहले एक कौम थी, इन्सान जिसका नाम था।

बिखरते हुए समाज में अत्याचार जुल्मो की कहानी का प्रारंभ ही जातिवाद से हुआ। निश्चित रूप से कई व्यक्तियों को यह विचार पढ़कर आश्चर्य होगा। किन्तु पंक्तियों में लिखी बाते सत्य है। कभी– कभी मूल में गलती हो जाती है कई बार सही अर्थ न समझने के कारण भी उसके प्रति मान्यता में त्रुटियां होती है।इस कारण उसके परिणाम मूल भावना से विपरित होते है। ऐसे ही जाति शब्द को वर्ण शब्द का पर्यायवाची शब्द मानने के कारण यहां वर्ण को जाति समझा गया इस कारण जाति की समस्या उत्पन्न हो गई।

इसके लिए हमें मानव जाति के इतिहास की ओर चलना होगा। वहां जाने पर पायेगें कि पहले जाति शब्द का कहीं न उल्लेख था, न प्रचलन था वर्ण व्यवस्था का उल्लेख प्रत्येक स्थान पर पाया जाता है।

पहले शिक्षा पद्धति वर्तमान स्कूल, कॉलेज के समान नहीं थी, गुरूकुल शिक्षा प्रणाली ही प्रचलन में थी और यहीं वर्ण व्यवस्था का निर्धारण हुआ करता था।

माता– पिता बालकों को शिक्षा प्राप्त करने हेतु गुरूकुल में प्रवेश दिलाते थे। कुछ वर्षों की शिक्षा– दीक्षा के पश्चात् आचार्य अपने शिष्य की योग्यता के आधार पर यह निश्चित करते थे कि किस शिष्य में किस प्रकार की योग्यता है। उसी आधार पर गुरूकुल के आचार्य छात्र के माता–पिता से चर्चा कर वर्ण का निर्धारण करते थे।

इसका आधार जन्मगत जाति नहीं उस शिष्य की योग्यता होती थी, प्रखर बुद्धि का, आत्म ज्ञानी मनोवृत्ती तथा अध्यात्म में रूची रखने वाले को ब्राह्मण, वीरता, रक्षा राष्ट्र के प्रति सेवा भाव व सतर्कता रखने वाले कर्मठ शिष्य को क्षत्रिय, संग्रह, आदान, प्रदान हिसाब में चतुर शिष्य को वैश्य तथा जो बुद्धि से कमजोर हो, तथा पढ़ने में, वीरता में, चतुराई में, जिसकी योग्यता न हो उसे सेवा कार्य के योग्य माना जाता था। इसी प्रकार जैसे आज पढ़ाई के लिए अलग–अलग क्षेत्रों का चयन होता है वैसे ही यह घोषणा आचार्य करते थे कि शिष्य, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र वर्ण के योग्य है। उसे फिर उसी प्रकार की विशेष शिक्षा दी जाती थी। शूद्र का अर्थ कोई जाति नहीं, शूद्र का अर्थ जो सेवा कार्य करें। पाचक के लिए भी शूद्र शब्द का उपयोग हुआ है।

इस प्रकार गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार मनुष्य की वर्ण व्यवस्था का निर्धारण होता था, यह हमारी प्राचीन सामाजिक व्यवस्था थी। इस बात के अनेक प्रमाण हमें मिल सकते है। घर –घर में पढ़ी जाने वाली रामायण में संत तुलसी दास लिखते हैं– **वरणाश्रम निज निज धरम निरत वेद पथ लोग,**
चलहि सदा पावहिं सुखई नहि भय शोक न रोग।

संत जी ने स्पष्ट लिखा है वेद पथ पर चलते हुए अपने–अपने वर्ण आश्रम धर्म का पालन करते हुए सदा सुखी भी भय शोक रोग उसमें नहीं था।

योगी राज भगवान श्री कृष्ण ने स्पष्ट कहा है **"चातुर्वरण्यं मयास भटं गुणकर्मविभागशः"** अर्थात् चार वर्ण का सृजन गुण कर्म स्वभाव के अनुसार होता हैं। इससे भी स्पष्ट होता है। इस संबन्ध में शास्त्रों में कहा गया– **जन्मना जायते शुद्रः संस्काराद्विज उच्यते** अर्थात जन्म से सभी शुद्र (यहां शुद्र से तात्पर्य अज्ञानी

बाल अवस्था के सदृश्य बुद्धि को समझे) होते हैं संस्कार से ही द्विज बनता है। यहां द्विज का अर्थ जिसका दूसरी बार जन्म हो। प्राचीन काल में पहला जन्म माता पिता और दूसरा जन्म गुरूकुल में आचार्य के सानिध्य में रह कर विद्या प्राप्त करने पर माना जाता था, यह व्यवस्था थी। इस प्रकार भगवान कृष्ण ने भी वर्ण व्यवस्था का संदेश दिया है।

वेद संसार का सर्व प्राचीन व प्रथम ज्ञान जो ईश्वरीय ज्ञान है। वेद वर्तमान सृष्टि जिसे लगभग दो अरब वर्ष हो रहे हैं उसका प्रथम ज्ञान है जिसे संसार के सभी महापुरूषों ने मान्यता दी है। वेद में इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण बात कहीं है जो जाति और वर्ण से उपर व श्रेष्ठ है। ऋग्वेद के मंत्र 10/53/6 में कहा– **"मनुर्भव जनया दैव्ययं जनम"** हम मनुष्य बनें और दूसरों को भी मनुष्य बनावें। इसमें भी जाति संबन्धि कोई चर्चा नहीं की गई है।

जाति वादी बताते हुए समाज में मनु को अकारण बदनाम किया गया जबकि मनु ने जाति व्यवस्था का कभी पक्ष लिया ही नहीं। इस पर कई बार बहस हो चुकी है। मनु विशुद्ध वैदिक विचार धारा के अनुयायी थे, उन्होंने जन्मजात जाति को भी महत्व नहीं दिया। मनु कहते हैं वे **"शूद्रा ब्राह्मण तामेति ब्राह्मणश्चेति शूद्रताम्।"** शुभ कर्म करने वाला व्यक्ति शूद्र से ब्राह्मण हो सकता है और ब्राह्मण कर्म त्यागने से ब्राह्मण से शूद्र हो सकता है। यहां एक बात महत्वपूर्ण है, गुण, कर्म से मनुष्य का वर्ण बदल सकता है जाति नहीं ? उसकी जाति तो एक ही है मनुष्य जाति। इसी बात को और स्पष्ट करते हुए मनु कहते है–

एकमेव तु शूद्रस्य प्रभुः कर्म समादिशत।
एतेशामेव वर्णानां शुश्रूशामनसूयया।

अर्थात्– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यादि वर्ण जो अध्यापन राष्ट्र रक्षा व्यापारादि कार्यो में लगे रहते हैं उनकों, भोजन बनाकर, वस्त्र धोकर, बर्तन साफ करके, सहायता करना, अर्थात तीनों वर्णों का सेवा करके सहयोग करना शूद्र कर्म है।

इस प्रकार मनु ने जाति व्यवस्था का समर्थन नहीं किया वर्ण व्यवस्था का ही बार–बार उल्लेख किया है और यह वर्ण भी केवल चार ही होते है पाचवां नहीं। इसका भी मनु ने स्पष्ट उल्लेख करते हुए लिखा है–

ब्राह्मणो क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो वर्णा द्विजायतः।
चतुर्थ एक जातिस्तु शूद्रो नास्ति पंचमः। (10/4)

अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनका दो बार पहला माता–पिता से दूसरा विद्या से जन्म होता है इसलिए इन्हे द्विज कहते हैं और चौथा सेवा कार्य हेतु शूद्र होता है इसके अतिरिक्त पाचवीं कोई जाति नहीं होती है। वे समस्त मानव जाति को एक पिता की संतान मानते हैं।

थोड़ा विचार करें कि एक ही पिता की संताने क्या अलग–अलग जाति की हो सकती हैं ? क्या व्यवहारिक जीवन में यह संभव है? यदि नहीं तो हम सब उस एक ईश्वर परमपिता, को हम सबका पिता कहते हैं तो फिर हम उसकी सन्तानों की अलग–अलग जाति कैसे हो सकती है ?

हम एक ही जाति के हैं अलग–अलग नहीं हो सकते। शास्त्रों में इसका स्पष्ट उल्लेख किया गया है **"समान प्रसवात्मिका जातिः"** अर्थात जिनकी प्रसव प्रक्रिया समान होती है वे एक जाति के होते है। इसलिए मनुष्य पशु, पक्षी, कीट पतंग इन सबकी प्रजनन प्रक्रिया अलग–अलग होने से इन्हे अलग–अलग जाति की योनी कहा गया। प्राणियों की जाति परमात्मा ने अवश्य बनाई है। किन्तु हिन्दू, मुसलमान, सिख्ख, ईसाई, जैन, बौद्ध, पारसी नहीं, सर्वण या अर्वण और अग्रवाल

माहेश्वरी, ब्राह्मण, राजपूत, आदि यह सब तो हमने बनाई है। उसने तो प्राणियों की जाति जो बनाई उसमें पशु, पक्षी, जलचर और मनुष्य ये बनाई है जो अलग–अलग योनी की रचनाओ के अनुसार माने जाते हैं।

अनेक बाते आज रूढ़ीगत मान्यताओं के आधार पर ही मानी जा रही है। जिसमें सत्य–असत्य, उचित–अनुचित को कोई स्थान नहीं होता बस पुरानी मान्यता को ही स्थान दिया जाता है। किन्तु इसे मानवीय गुण नहीं कहा जा सकता यह तो भेड़ चाल है। मनुष्य का लक्षण तो मननशीलता है, जिसमें सत्य–असत्य, उचित–अनुचित का विचार करके समझकर फिर उसे मान्यता दी जाती है।

जाति वाद का जहर समाज व राष्ट्रों के बीच खाई बन कर मानव को मानव से अलग रखने का काम कर रहा है। दुर्भाग्य से महाभारत काल से **इसका प्रारंभ हुआ। जिसमें एकलव्य और कर्ण को इसके जहर का परिणाम समाज वर्षों से भोग रहा है। भेदभाव, कटुता, संघर्ष, अशान्ति को ही जन्म दिया इसमें आहत होना पड़ा था। इस मानसिक संकीर्णता से समाज छोटा हो रहा है,** कट रहा है, सिमिटता जा रहा है। **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** के शाश्वत वाक्य को दफन किया जा रहा है। **"सर्वेभवन्तु सुखिनः"** के विचारों की धज्जियां उड़ा रहीं है।

फूट डालो राज्य करो की नीति का पुनरागमन दुर्भाग्य से जाति वाद के माध्यम से हो रहा है, जिसमें समाज व राष्ट्र का बहुत बड़ा अहित स्पष्ट दिखाई दे रहा है। हां कुछ स्वार्थी तत्व इस पर अपनी रोटी सेकने का प्रयास कर रहे हैं जिसमें उनका निजी स्वार्थ है। जहां स्वार्थ होता है वहां दूसरे की कितनी भी बड़ी क्षति हो उसे अनदेखा कर दिया जाता है क्योंकि स्वार्थी विचारधारा के बारे में कहा गया कि **"स्वार्थि दोषात् न पश्यति"** अर्थात् स्वार्थी को दोष नहीं दिखाई देते हैं। जातिवाद के नाम पर देश का भाग्य वोटों का बंटवारा करके संवारा जाता है।

अयोग्य, पतित किन्तु तथाकथित उच्च वर्ण में जन्में व्यक्तियों को भी जाति के कारण उच्च स्थान प्राप्त है। योग्य नैतिकता से युक्त ईमानदार व्यक्ति भी तथाकथित उच्च वर्ण में जन्म न लेने के कारण उपेक्षित है। डॉ. भीमराव आम्बेडकर जैसे विद्वान संविधान को संजोने वाले विश्व विख्यात व्यक्ति को भी जातिवाद के कारण सनातन धर्म से बौद्ध मत को अपनाना पड़ा।

वर्षों के बाद में महान सुधारक, वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस बात को समझा स्वामी श्रद्धानन्द ने उसे और आगे बढ़ाया और आज करोड़ों व्यक्ति इस सनातन धर्म से दूर होने से आर्य समाज की ओर से बचे हैं।

आज जातिवाद के कारण समाज व राष्ट्र कमजोर हो रहा है राष्ट्रिय संगठन को बहुत बड़ी क्षति पहुचाने का प्रयास हो रहा है यदि इस प्रयास को नही रोका गया इसके विरूद्ध आवाज नहीं उठाई तो हम सभी इसके लिए दोषी होगें। क्योंकि चुप रहने के कारण कहा गया **मौनं सत्यं विनष्यति,** चुप रहना सत्य को नष्ट कर देता है।

इसलिए उस परमात्मा की व्यवस्था को सभी स्वीकार करें, समाज व राष्ट्र की शक्ति को और जातिवाद में न बांटे। मानवीय संगठन को जो पहले से ही क्षति ग्रस्त हो रहा है। उसे और क्षति न पहुंचावे तथा इस विचार को हम मानें कि,

दुनिया का इक रंगी आलम आम था
पहले एक कौम थी, इन्सान जिसका नाम था।

वैज्ञानिकों की पंक्ति में –

महर्षि कणाद

परमात्मा, विश्व का निर्माण और संचालन की प्रक्रिया के विषयों में हमारे देश में अनादि काल से चिन्तन होता रहा है। इस चिन्तन द्वारा महर्षियों को जो अनुभूति हुई, उसे ही दर्शन का नाम दिया गया है। भारतीय वैदिक दर्शन के छः शास्त्र हैं– न्याय, मीमांसा, वैशेषिक, सांख्य, योग और वेदान्त। उनमें से वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कणाद थे।

वायु पुराण के अनुसार महर्षि कणाद द्वारका के समीप प्रभासपाटन में जन्में थे और सोमशर्मा के शिष्य थे। आपका सच्चा नाम ऊलूकमुनि था ऐसा माना जाता है। आप कश्यप गोत्र के थे। विद्वानों के अनुसार महर्षि कणाद का समय ईसा से 400 वर्ष पूर्व का माना जाता है। यद्यपि कुछ विद्वान आप को बुद्ध के पूर्व हुए मानते हैं। आप खेत में गिरे हुए अन्न के कण (दाने) चुन–चुन कर अपनी भूख का निवारण करते थे। इस प्रकार अनाज के कण–कण के भी सदुपयोगकर्ता होने से आप कणाद नाम से विख्यात हुए। दूसरे अर्थों में कण – अणु, अणु के सिद्धान्त के प्रवर्तक होने से आप कणाद कहे गए।

आपका वैशेषिक सूत्र ही वैशेषिक दर्शन का मूल ग्रंथ है। प्रशस्तपाद ने उसके ऊपर 'पदार्थ धर्मसंग्रह' नामक भाष्य लिखा था। वैशेषिक दर्शन का आधार परमाणुवाद है। किसी झरोखे की जाली में से आने वाले धूप के सूर्य किरणों में उड़ते हुए दिखने वाले सूक्ष्मकण का साठवां भाग परमाणु कहलाता है। यह परमाणु नित्य है। अपनी विशेषता के कारण प्रत्येक पदार्थ में उसका भिन्न–भिन्न अस्तित्व होता है। इन विशेषताओं का विवेचन करने के कारण इस दर्शन को वैशेषिक दर्शन कहा गया। इस वैशेषिक दर्शन में 370 सूत्र हैं।

वैशेषिक दर्शन के अनुसार विश्व सात पदार्थों में विभक्त है– द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवास और अभाव। महर्षि कणाद के मत में विश्व का निर्माण नौ द्रव्यों से हुआ है। पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिशा, मन और आत्मा।

इस ब्रह्माण्ड में 24 गुण हैं – रूप, रस, गन्ध, शब्द, स्पर्श, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, संख्या, परिमाण, पृथकत्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरूत्व, द्रवत्व, बुद्धि, स्नेह, संस्कार, धर्म और अधर्म। कर्म के पांच प्रकार हैं – उत्क्षेपण, अवक्षेपण, आकुंचन, प्रसारण और गमन। अनेक वस्तुओं में समानता के आधार से उत्पन्न एकत्व बुद्धि के आश्रय को सामान्य कहते हैं, जैसे कि मनुष्यत्व।

इस ग्रंथ में कणाद ऋषि ने धर्म का लक्षण इस प्रकार दर्शाया है – यतो ऽ भ्युदयनिः श्रेयससिद्धिः स धर्मः। अर्थात जिसमें अभ्युदय (इस लोक के भौतिक सुख व समृद्धि) तथा निःश्रेयस (पारमार्थिक – मोक्ष) दोनों की सिद्धि प्राप्त की जाए वह धर्म है।

महर्षि दयानन्द ग्रंथ परिचय –

सत्यार्थ – प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश महर्षि का सबसे प्रसिद्ध ग्रंथ है, इस हेतु यह लेख अवश्य पढ़े और पढ़ावें।

प्रश्न 1 महर्षि दयानन्द कृत ग्रंथों में सबसे प्रसिद्ध ग्रंथ कौन–सा है ?

उत्तर : सत्यार्थ – प्रकाश।

प्रश्न 2 सत्यार्थ–प्रकाश सबसे अधिक प्रसिद्ध क्यों हुआ ?

उत्तर : क्योंकि इस ग्रंथ को पढ़ने से अज्ञान अन्धकार में भटक रहे असंख्य लोगों को ज्ञान का प्रकाश मिला। ज्ञान के इस दीपक के प्रकाश में कोई भी मनुष्य झूठे मत–मतान्तरों एवं पाखण्ड के गड्ढ़े में नहीं गिर सकता। उसके हाथ में सभी गुत्थियों और उलझनों को सुलझाने की चॉबी प्राप्त हो जाती है।

प्रश्न 3 इस ग्रंथ की रचना में महर्षि का मुख्य प्रयोजन क्या था ?

उत्तर : महर्षि दयानन्द के अपने ही शब्दों में, 'मेरा इस ग्रंथ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य–सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना, सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है' ग्रंथ का नाम 'सत्यार्थ प्रकाश' (सत्य+अर्थ+प्रकाश) स्वयं ही इस प्रयोजन को स्पष्ट कर रहा है।

प्रश्न 4 महर्षि के अनुसार सत्य का अर्थ क्या है ?

उत्तर : जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाय।

प्रश्न 5 इस ग्रंथ में कितने अध्याय हैं ?

उत्तर : इस ग्रंथ में चौदह अध्याय अथवा विभाग हैं, जिन्हें समुल्लास का नाम दिया गया है। इसमें पहले दस समुल्लास पूर्वार्द्ध और अन्तिम चार समुल्लास उत्तरार्द्ध कहलाते हैं। अन्त में 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' है।

प्रश्न 6 इसकी रचना कब की गई ?

उत्तर : प्रथम संस्करण का आरम्भ आषाढ़ वदी 13, संवत् 1931 (12 जून, सन् 1874, शुक्रवार) के दिन हुआ और समाप्ति विक्रमी संवत् 1931, आश्विन शुक्ला की प्रतिपदा, रविवार के दिन हुई। द्वितीय संस्करण का समय भाद्रपद शुक्लपक्ष, विक्रमी संवत् 1939 है। महर्षि ने इसे महाराणा जी के उदयपुर में लिखा।

प्रश्न 7 पूर्वार्द्ध के दस समुल्लासों में किन–किन विषयों को लिया गया है?

उत्तर : पूर्वार्द्ध के दस समुल्लासों में भिन्न–भिन्न विषयों को लेकर महर्षि ने अपने विचारों को अभिव्यक्त किया है। वे विषय क्रमशः निम्नलिखित हैं –

1. प्रथम समुल्लास में ईश्वर के मुख्य नाम ओ३म् के साथ सौ विभिन्न नामों की अर्थसहित व्याख्या।

2. द्वितीय समु. में सन्तानों को शिक्षा प्रदान करने की विधि और महत्व।

3. तृतीय समु. में ब्रह्मचर्य, पठन व्यवस्था, सत्यासत्य ग्रंथों के नाम और पढ़ने पढ़ाने की रीति।

4. चतुर्थ समु. में विवाह और गृहाश्रम का व्यवहार।

5. पंचम समु. में वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम की विधि।

6. छठे समु. में राजा, राजनीति आदि विषयों को लेकर राजधर्म की व्याख्या।

7. सप्तम समु. वेद और ईश्वर का विषय।

8. अष्टम समु. में सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय का वर्णन।

9. नवम समु. में विद्या, अविद्या, बन्ध और मोक्ष की व्याख्या।

10. दशम समु. में आचार, अनाचार, भक्ष्य और अभक्ष्य विषयों की व्याख्या।

इस प्रकार ये दसों समुल्लास मण्डनात्मक हैं, जिनमें महर्षि ने सत्य सनातन वेद धर्म के अनुसार उपर्युक्त विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किये हैं।

प्रश्न 8 उत्तरार्द्ध के चार समुल्लासों में किन–किन विषयों का प्रतिपादन है?

उत्तर : ये चार समुल्लास खण्डनात्मक हैं अर्थात् इनमें महर्षि ने अन्य मत मतान्तरों की मिथ्या बातों का खण्डन किया है। इन ग्यारह से चौदह समुल्लासों में जिन–जिन मतों के विषय में लिखा है, वे निम्नलिखित हैं –

1. ग्यारहवें समुल्लास में आर्यावर्त अर्थात भारत में उस समय प्रचलित मत मतान्तरों में मान्य मिथ्या बातों का खण्डन।

2. बारहवें समुल्लास में चार्वाक, बौद्ध और जैन, इन नास्तिक मतों का खण्डन।

3. तेरहवें समुल्लास में ईसाई मत का खण्डन।

4. चौदहवें समुल्लास में मुसलमानों के मत का खण्डन।

प्रश्न 9 महर्षि को दूसरे मतों का खण्डन करके उनका मन दुःखाने की क्या आवश्यकता थी ? केवल अपने सत्य विचारों को ही प्रकट कर देते।

उत्तर : उस समय विभिन्न मत–मतान्तरों की बुराईयों से देश की जो दुर्दशा हो रही थी उसमें महर्षि बहुत चिन्तित थे। वे इन बुराईयों को दूर कर देश व देशवासियों की दशा सुधारना चाहते थे, किसी का दिल दुःखाना नहीं। महर्षि के शब्दों में –

"विद्वान आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश व लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने वे सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात स्वयं अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।" महर्षि आगे लिखते हैं –

"मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है, तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है, परन्तु इस ग्रंथ में ऐसी बात नहीं रक्खी है और न किसी का मन दुःखाना वा किसी की हानि पर तात्पर्य है। किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं।" इस प्रकार मनुष्यों की उन्नति को लक्ष्य में रखकर उन्होंने असत्य बातों का खण्डन किया।"

प्रश्न 10 इससे तो भिन्न–भिन्न मतों की बुराईयॉ जानकर आपस में मन–मुटाव और लड़ाई–झगड़े होगें ?

उत्तर : ऐसा नहीं है, महर्षि तो सभी मनुष्यों को एक ही धर्म का अनुयायी बनाकर प्रेमपूर्वक रखना चाहते थे। इसमें उनके दो उद्देश्य थे। उनके शब्दों में "इसमें यह अभिप्राय रखा गया है कि जो सब मतों में सत्य–सत्य बातें हैं, वे सब में अविरूद्ध होने से उनका स्वीकार करके जो–जो मत–मतान्तरों में मिथ्या बातें हैं, उन–उन का खण्डन किया है। इसमें यह भी अभिप्राय रखा है कि सब मत–मतान्तरों की गुप्त वा प्रकट बुरी बातों का प्रकाश कर विद्वान अविद्वान सब साधारण मनुष्यों के सामने रखा है, जिसमें सबसे सबका विचार होकर परस्पर प्रेमी हो के एक सत्य मतस्थ होवें, इस प्रकार यदि सब परस्पर आचरण करें तो लड़ाई–झगड़े के स्थान पर प्रेम भाव की वृद्धि होगी।"

प्रश्न 11 अन्त में प्रस्तुत 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर : "स्वमन्तव्यामन्तव्य" में महर्षि ने सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् सार्वजनिक धर्म, जिसको सदा से सब मानते आये और मानेंगे भी, की परिभाषाएं प्रस्तुत की हैं। इनको सनातन नित्यधर्म कहते हैं। वेदादि सत्यशास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त विद्वानों द्वारा जो ईश्वर आदि शास्त्र पदार्थ जैसे माने गये हैं, उनको महर्षि भी वैसा ही मानते थे उसी को उन्होंने इसमें प्रकाशित किया है। इसमें उन्होंने ईश्वर से लेकर धर्म, अधर्म, स्वर्ग, नरक, जन्म, मृत्यु सहित सगुणनिर्गुस्तुति प्रार्थनोपासना तक 51 पदार्थों के विषय में अपना सिद्धान्त (मन्तव्य) प्रकट किया है। कोई नवीन कल्पना या मत चलाने का उनका लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं था।

आर्यावर्त देश

– प्रो. सत्यपाल शास्त्री

हिमालय, विन्ध्याचल, सिन्धु नदी औश्र ब्रह्मपुत्र नदी इन चारों के बीच और जहां तक उनके विस्तार हैं, उनके मध्यम में जो देश हैं, उसका नाम आर्यावर्त देश है।

प्रियं मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु मा कृणु।
प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्रे उतार्ये।।

अथर्व. 19/62/1

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने 'सत्यार्थप्रकाश' के उपसंहार पर तीसवॉं मन्तव्य लिखा है कि – "आर्यावर्त देश इस भूमि का नाम इसलिए है कि इसमें आदिसृष्टि से आर्य लोग निवास करते हैं, परन्तु इसकी अवधि उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्याचल, पश्चिम में अष्टक और पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी है। इन चारों के बीच में जितना देश है, उसको आर्यावर्त कहते हैं और जो इसमें सदा रहते हैं, उनको भी आर्य कहते हैं।

महर्षि से प्रश्न किया गया कि आदिसृष्टि मनुष्यों की किस स्थल में हुई ?

उत्तर – त्रिविष्टप, अर्थात् जिसको तिब्बत कहते हैं, वहॉं प्रथम आदि मानव की सृष्टि हुई। उसी में आर्य–अनार्यों का भेद भी उत्पन्न हुआ।

प्रश्न – तिब्बत से यहॉं कैसे आये ?

उत्तर – जब आर्य और दस्युओं में, अर्थात् विद्वान जो देव, अविद्वान जो असुर, उनमें सदा लड़ाई–बखेड़ा हुआ–किया, जब बहुत उपद्रव होने लगे तब आर्य लोग सब भूगोल में उत्तम इस भूमि के खण्ड को जानकर यहां आकर बसे। इसी से इस देश का नाम आर्यावर्त हुआ। आर्यावर्त की सीमा का वर्णन करते हुए महर्षि मनु के शब्दों में लिखते हैं –

आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्।
तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्त्त विदुर्बुधाः।।
सरस्वती दृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्।
तं देवनिर्मितं देशम् आर्यावर्तं विचक्षते।।

मनु. 2/22/17

उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्याचल, पूर्व और पश्चिम में समुद्र तथा सरस्वती, पश्चिम में अटक नदी, पूर्व में दृषद्वती, जो नेपाल के पूर्व भाग पहाड़ से निकल कर बंगाल–आसाम के पूर्व और ब्रह्मा के पश्चिम में होकर दक्षिण के समुद्र में मिली है, उसको ब्रह्मपुत्र कहते हैं, और जो उत्तर के पहाड़ों से निकलकर दक्षिण के समुद्र की खाड़ी में अटक मिली है। हिमालय की मध्य रेखा से दक्षिण और पहाड़ों के भीतर और रामेश्वर पर्यन्त विन्ध्याचल के भीतर जितने देश हैं उन सबको आर्यावर्त इसलिए कहते हैं कि यह आर्यावर्त देव, अर्थात् विद्वानों ने बसाया और आर्यजनों के निवास से आर्यावर्त्त कहलाया।

क्रमशः.....

साभार – वैदिक सिद्धान्त रत्नावली

नेपोलियन और बालक लेनार्ड

"जिनके हृदय में उत्साह होता है, वे कठिन से कठिन कार्य आ पड़ने पर भी हिम्मत नहीं हारते।" रामायण

एक युद्ध में नेपोलियन वोनापार्ट के सैनिकों ने कुछ अंग्रेजी जहाजों को पकड़ लिया। उन जहाजों से बन्दी बनाए गए लोगों में एक उन्नीस वर्षीय युवा भी था। उसका नाम लेनार्ड था।

अगले दिन इंगलैण्ड से आया एक अन्य लड़का बोनापार्ट के सैनिकों के हाथ लग गया। सैनिकों ने उसे भी पकड़कर लेनार्ड वाले कैदखाने में बन्द कर दिया। रात्रि में उस दूसरे लड़के ने लेनार्ड को एक पत्र दिया, जिसमें लिखा था –

मेरे बेटे लेनार्ड। मैं इस वक्त काफी बीमार चल रही हूं, शायद मेरा बच पाना अब कठिन है। अतः मेरी अन्तिम प्रबल इच्छा तुम्हें देखने की है। तुम जहां कहीं भी हो, जितनी जल्दी हो सके मेरे बेटे मेरे पास चले आओ। .....तुम्हारी मॉ

उस पत्र को पढ़ने के बाद लेनार्ड अपनी माता को देखने के लिए तड़प उठा और किसी भी तरह जल्दी से अपनी मॉ के पास पहुंचने का उपाय सोचने लगा।

उसी रात्रि में, अपने साथी लड़के की मदद से उस कैदखाने के सींखचों को चौड़ा कर वह भाग निकला। किन्तु पकड़ा गया। अब सैनिकों ने उसके साथ सख्ती बरती और उसके पैरों में जंजीर की बेड़ियॉ पहना दी।

लेनार्ड ने दूसरी रात को पुनः प्रयत्न किया और अपने पैरों में बंधी जंजीरों की बेड़ियों को काटकर भाग निकला। परन्तु बोनापार्ट के सैनिकों द्वारा फिर पकड़ा गया।

तीसरी रात्रि में एक बार फिर से लेनार्ड कैदखाने से भागने में सफल हो गया। किन्तु ! दुर्भाग्यवश फिर से उन सैनिकों के हाथ लग गया।

अगली सुबह नेपोलियन बोनापार्ट जब जेल दौरे पर आया, तो वहां के सैनिकों ने उसको लेनार्ड के तीन बार भागने के बारे में जानकारी बतायी तथा लेनार्ड को मौत के घाट उतारने की नेपोलियन से आज्ञा मॉगी।

नेपोलियन के मन में उस नवयुवक लेनार्ड को देखने की जिज्ञासा उठी, उसने सैनिकों को लेनार्ड को लाने का आदेश दिया।

सैनिकों ने आज्ञा पाते ही लेनार्ड को तुरन्त नेपोलियन बोनापार्ट के सामने हाजिर कर दिया। नेपोलियन ने उस युवक को नींचे से ऊपर तक देखा, फिर पूछा– लेनार्ड ! आखिर तुम्हारे पास ऐसा कौन सा मनोबल है, जो तुम्हें बार–बार कैदखाने से भागने को प्रेरित करता है।

उस बालक ने अपने जेब से वह पत्र निकाला और उसे नेपोलियन को दे दिया।

उस पत्र को पढ़ते ही नेपोलियन को सारा मांजरा समझ में आ गया। उसने उसी क्षण लेनार्ड के हाथों में दो सोने की मोहरें थमा दी और अपने सैनिकों को आदेश दिया कि – इस युवक को तुरन्त ही जेल से रिहा कर दिया जाए। क्योंकि इस बच्चे का मनोबल इतना ऊँचा है कि दुनियॉ की कोई दीवार इसे नहीं रोक पायेगी।

"सफलता का पहला रहस्य है आत्मविश्वास"

गतांक से आगे .....

आजादी की बुनियाद

लेखक – **सीताराम आर्य, विदिशा**

उसी जमाने में सर्बखाप पंचायत नामक एक संगठन देश के अन्दर सक्रिय था। वह संगठन बहुत बड़ा एवं शक्तिशाली था, जिसके पास 85 हजार सशस्त्र सैनिक थे। हरयाणा–पंजाब–राजस्थान तथा गुजरात तक वह विस्तृत रूप से फैला हुआ था। उस समय अधिकांश राजे महाराजे ऐसेआराम में डूबे हुए थे। सुरा और सुन्दरियों में लिप्त होकर सोये पड़े रहते थे, उन्हें देश और धर्म की कोई चिन्ता नहीं थी। कई राजाओं ने तो अपनी रियासतें, इस्ट इण्डिया कम्पनी के पास गिरवी रख दी थी। विदेशी हमलावर डाकुओं से अपनी आत्म रक्षा करने हेतु तथा उनसे मुकाबला करने के लिये जनता द्वारा उक्त संगठन का निर्माण किया गया था। कई बार विदेशी हमलावरों से उस संगठन के सैनिकों की मुठभेड़ हुई और आतताईयों को मार भगाया। उस संगठन के प्रमुख लोगों से भी स्वामी दयानन्द की देश को स्वतन्त्र कराने बाबद् कुछ गहन चर्चायें हुई थीं।

(सन् 1857 की कांति में स्वामी दयानन्द का योगदान)

महर्षि दयानन्द के जहां–जहां अंग्रेजों की सैनिक छावनियां थीं वहां–वहां पहुंचकर और उनके अन्दर प्रवेश करके भारतीय जवानों के अन्दर देश भक्ति की भावना कूट–कूट कर जगाई और सोये हुए देश को आपने झकझोर–झकझौर कर जगाया। उसी का नमूना है वीर बहादुर देश भक्त मंगल पाण्डे, जिसने एक अंग्रेज सैनिक अफसर को गोली से उड़ा दिया था।

स्वामी दयानन्द जी के प्रयासों में एक गुप्त मीटिंग हुई थी। जिसमें मुख्य अतिथि तथा मुख्य वक्ता के रूप में प्रज्ञा चक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती को मथुरा से पालकी में बिठाकर बुलाया गया था। वही स्वामी विरजानन्द सरस्वती, दयानन्द सरस्वती के परम गुरू बने। उक्त मीटिंग का एक स्मृति पत्र मीर मुश्ताक मीरासी का लिखा हुआ उर्दू का हम यहां देना चाहेगें। आदरणीय आचार्य श्री सत्यप्रिय शास्त्री जी की लिखी हुई पुस्तक (भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में आर्य समाज का योगदान) उसमें यह पत्र लिखा है। पत्र निम्न प्रकार है –

मीर साहब लिखते हैं कि सन् 1856 बमुताबिक सम्बत् 1913 को एक पंचायत मथुरा के तीर्थगाह पर मुनआविद हुई। उसमें हिन्दू–मुसलमान और दूसरे मजहब के लोगों ने शिरकत की थी। इस पंचायत में एक नाबीना हिन्दू दरबेश की पालकी में बिठाकर लाया गया था। उनके आने पर सब लोगों ने उनका अदब किया। जब यह एक चौकी पर बैठ गया तब एक हिन्दू और एक मुसलमान फकीरों ने उनकी कदमबोसी की (यह हिन्दू फकीर स्वामी दयानन्द ही थे) इसके बाद सबके अदब के बाद नाना साहब पेशवा, मौलवी अजीमुल्लाखान, रंग बाबू और शहनशाह बहादुर शाह जफर का शहजादा इन सबने इनके अदब में कुछ सोने की अशर्फियां पेश की।

इसके बाद एक हिन्दू (स्वामी दयानन्द) और एक मुसलमान फकीर ने यह कहा कि हमारे उस्ताद साहिबान की जबान मुबारिक से जो तकरीर होगी। उसे तसल्ली के साथ–साथ सब साहिबान सुनें और वह इस मुल्क के लिए बहुत मुफिद साबित होगी और यह वली अल्लाह साधु बहुत जवानों का आलिम और हमारा और हमारे मुल्क का बुजुर्ग है। खुदा की मेहरबानी से ऐसे बुजुर्ग हमें मिलें, यह खुदा का हम पर बहुत बड़ा एहसान है।

मीर साहब आगे लिखते हैं कि सबसे पहले उन्होंने संस्कृत में खुदा की तारीफ की, और फिर उर्दू में उसका तर्जुमा किया। इस बुजुर्ग ने यह कहा था कि आजादी जन्नत है और गुलामी दोजख है। अपने मुल्क की हुकूमत के मुकाबले में हजार दर्जे बेहतर है। दूसरों की गुलामी हमेशा बेइज्जती और बेशर्मी का बायस है, हमें किसी कौम से और किसी मुल्क से कोई नफरत नहीं है। हम तो खल्के खुदा की महबूबी के लिए खुदा से सरोज दुआ मांगते हैं, मगर हुक्मरां कौम से खासकर फिरंगी जिस मुल्क में हुकूमत करते हैं, उस मुल्क के बाशिन्दों के साथ इन्सानियत का बर्ताव नहीं करते हैं। खुदा की खलकत में सब इन्सान भाई–भाई हैं। मगर गैर मुल्की हुक्मरां कौम इन्हें भाई न समझकर गुलाम समझती है। किसी भी मजहब की किताब में ऐसा हुक्त नहीं है कि अशरफ मखलुकात के साथ दगा की जावे और अल्लाह के हुक्त की खिलाफबरजी की जावे। इस वास्ते मातहत लोगों का न कोई ईमान है और न कोई उनकी शान है।

फिरंगियों में बहुत सी अच्छी बातें भी हैं, मगर सियासी मसले में आकर वह अपने कौल–फैल को न समझकर फौरन बदल जाते हैं। और हमारी अच्छाई और नेकसलाह को फौरन ठुकरा देते हैं। इसकी असल बजूहात यह है कि हमारे मुल्क को अपना वतन नहीं समझते। हमारे मुल्क का बच्चा–बच्चा उनकी खैरख्वाही का दम भरे फिर भी वे अपने वतन के कुत्ते को हमारे इन्सानों से अच्छा समझते हैं। यही सब कमी का बायस है, इन्हें अपने ही वतन से मुहब्बत है। इसलिए ये सब वाशिन्दगान हिन्द से इलतजा करते हैं। जितना वह अपने मजहब से मुहब्बत करते हैं उतना ही इस मुल्क के हर इन्सान का फर्ज है कि वह वतनपरस्त बनें और मुल्क के हर बाशिन्दे को भाई–भाई जैसी मुहब्बत करे तब हमारे दिलों के अन्दर वतनपरस्ती आ जायेगी तो इस मुल्क की गुलामी खुद–ब–खुद जुदा हो जावेगी। हिन्द के रहने वाले सब आपस में हिन्दीभाई हैं।

यह पंचायत चार रोज तक मतबातर होती रही। पहले दिन आने वाले सब मेहमानों की एक दूसरे से मुलाकात कराई गई थी। दूसरे दिन हजरत आदम से लेकर हजरत मुहम्मद अलरसूल सलै उल्लाह अलैह व सलम और शंकराचार्य, महावीर स्वामी अनेक ऋषि मुनि और चौथे दिन नाबीना सन्यासी महात्मा विरजानन्द जी और मुसलमान साई मियां ममदूनशाह ने शुरू में विरजानन्द जी की तकरीर से पहले शुरूआत की। आज के दिन की तकरीर में खांश–खाश लोगों की ही

जमायत थी और कोई खुफिया सीरकारी आदमी इसमें नहीं था। नाबीना महात्मा की तकरीर बहुत ही पुरजोर थी। और हर मजहबी इल्म से तालुक रखती थी। डेढ़ घण्टे तक तकरीर में खाश–खाश इलफाज तहरीर किये हैं। बांकी उन्होंने हर पहलुओं पर रोशनी डाली थी। जब महात्मा विरजानन्द को पालकी में बैठाकर लाया गया, उस वक्त हिन्दू–मुसलमान फकीरों ने इनकी खुशी में शंख, घड़ियाल, नागफणी, नक्कारा, तुरही और नरसिंहे बजाये थे। खुदा परस्ती और वतनपरस्ती के गीत गाये थे। यह नाबीना साधु हर इल्म को समझने की ताकत रखता था। और खुदा का जलवे जुलाल इसकी जुबान से जाहिर होता था। मैंने भी अपनी रूह के तकाजे के मुताबिक पांच फूल उसके सामने पेश किये, और उनकी कदमबोशी की। खुदा से दुआ मांगी कि खुदा ऐसी नेक रूहों को खलकत की भलाई के लिये हमेशा पैदा करे।

तफनीश करदय मीर मुश्ताक मीरासो कासिद सर्वखाप पंचायत

इस पत्र के लेखक सर्वप्रथम पंचायत के क्लकै तथा प्रतिनिधि श्री मीर मुश्ताक मीरासी हैं। 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम को क्रियान्वित करने के विचारार्थ मथुरा में सारे देश के राष्ट्रप्रेमी नेताओं तथा राजनीतिज्ञों की जो विशाल बैठक हुई थी, उसमें उक्त मीरासी महोदय सर्वखाप पंचायत के प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुए थे। यह पंचायत पुरातन हरयाणा प्रदेश का एक ग्रामीण संगठन था। प्राचीन मानचित्र के अनुसार हरयाणा प्रान्त का बिस्तार मुलतान से लेकर मन्दसौर (मध्य प्रदश) तक था। इस पंचायत की अपनी एक सेना थी जिसमें 85 हजार पहलवान योद्धा थे। जिन्होंने सिकन्दर की सेनाओं को रोककर वापिस जाने पर विवश कर दिया था। देश की स्वाधीनता के प्रत्येक मौर्चे पर यह सेना सदैव अग्रणी रहती थी। 1857 में अंग्रेजी साम्राज्य का तख्ता उलटने के लिए जो गुप्त बैठकें होती थी, उनमें से एक बैठक में मीर साहब सम्मिलित हुए थे। वहां उन्होंने जैसा देखा वैसा हाल इस पत्र में आप पढ़ सकते हैं। इस पत्र के लिये चौ. कबूलसिंह जीं महामन्त्री सर्वखाप पंचायत शोरम जि मुजफ्फर नगर (यू.पी.) के अत्यन्त आभारी हैं जिनकी कृपा से आर्य जगत को यह महत्वपूर्ण सामग्री तथा जानकारी उपलब्ध हो सकी।

क्रमशः .....

आस्था चैनल पर वैदिक प्रवचन

आस्था चैनल पर प्रतिदिन रात्रि 9.30 पर विचार टी. वी. के माध्यम से वैदिक विद्वानों के प्रवचनों का प्रसारण प्रारंभ हो गया है। आप स्वयं देखें व दूसरों को जानकारी देवें।

प्रेरणास्पद जीवन –

अपने पेरिस से प्यार करता हूं

डॉ. अन्सारी भारत से फ्रांस गये थे। एक दिन वे पेरिस की चौड़ी सड़क पर टहलते हुए जा रहे थे। उन्होंने जेब में हाथ डाला तो हाथ में एक कागज आ गया। देखा तो कागज काम का नहीं था। डॉ. अन्सारी ने कागज मोड़कर एक पुड़िया बनायी और उसे वहीं सड़क पर फैंक कर आगे बढ़ गये।

तभी पीछे से एक लम्बी–चौड़ी कार आकर रूकी। उसमें से एक व्यक्ति निकला, उसने पुड़िया उठाकर सड़क किनारे रखे कूड़े के ढ़ोल में डाल दी। उस व्यक्ति ने डॉ. अन्सारी के कंधे पर हाथ रखकर कहा – मैं अपने पेरिस से प्यार करता हूं, उसे स्वच्छ रखना चाहता हूँ।

एकाग्र साधना से उपलब्धि बालक आइस्टीन की

जर्मनी एक विद्यालय में एक बालक पढ़ता था। अध्यापक उसे समझाकर हार जाते थे, लेकिन गणित के सरल प्रश्न भी उसकी समझ में नहीं आते थे। कभी–कभी पिटाई भी हो जाती थी। सभी उसे बुद्धू कहते थे।

एक बार गणित का एक प्रश्न बार–बार समझाने पर भी उसे नहीं आया तो अध्यापक ने पिटाई की और कहा – भगवान ने इसे मस्तिष्क ही नहीं दिया। इस घटना से उसे बहुत ठेस लगी। उसने विद्यालय छोड़ दिया। वह मन को एकाग्र करके स्वयं ही पढ़ने लगां कुछ समय में उसने बहुत सी पुस्तकें पढ़ डालीं। इसके पश्चात इसी बुद्धू कहे जाने वाले बालक ने गणित के नये–नये सिद्धांत खोज निकाले। वही बालक आइस्टीन नाम से प्रसिद्ध हुआ। उनके समय में संसार में उन जैसा गणितज्ञ दूसरा नहीं हुआ।

लोक सेवा ही सच्ची सेवा

सिख्खों के चौथे गुरू रामदास के अनेक शिष्य थे। वे सभी बुद्धिमान एवं तार्किक थे। उनमें से एक का नाम था अर्जुन देव। गुरू जी के प्रति उसकी अटूट श्रद्धा थी। वह प्रत्येक आदेश का अक्षरशः पालन करता था। गुरू की भक्ति ही उसकी परम्परा तथा शिक्षा थी।

गुरू रामदास जी ने अर्जुन देव को आश्रम में बर्तन मॉजने का काम सौंप दिया। वह इस कार्य को सहर्ष तथा पूजा भाव से करता था। दूसरे लड़के अर्जुन देव को उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे। वे समझते थे कि गुरूजी ने इसे सबसे निम्न तथा हेय कार्य सौंपा है।

गुरू रामदास जी को अपने उत्तराधिकारी का चयन करना था। उन्होंने सभा बुलायी। गुरूजी ने सबको समझाना प्रारम्भ किया। लोक सेवा में सबसे बड़ी योग्यता श्रद्धा, अहंकारशून्यता और अनुशासन है। मैंने अर्जुन देव में इस त्रिवेणी के दर्शन किये हैं, अतः अब आगे ये मेरे उत्तराधिकारी रहेगें। यह सुनकर सभी शिष्य आश्चर्यचकित रह गये।

प्रेरक प्रसंग –

न्यायाधीश नील माधव का शान्ति प्राण त्याग

बंगाल के प्रसिद्ध न्यायाधीश श्री नील माधव बन्धोपाध्याय जो सत्य निष्ठता के लिए बहुत विख्यात थे। अपने को स्वस्थ बताकर उन्होंने पांच हजार रूपए का बीमा कराया जबकि वे एक रोग से पीड़ित थे। जीवन के अन्तिम समय में नील माधव जी अत्यन्त अशक्त और आकुल व्याकुल थे। उनके प्राण निकल नहीं पा रहे थे। उनसे पूछा गया कि क्या बात है ?

उन्होंने कहा – अब से पांच वर्ष पूर्व बीमा के समय डॉक्टरी होने पर मैंने मधुमेह बीमारी को छिपाकर अपने आपको स्वस्थ बताने का मिथ्या व्यवहार किया।

बस असत्य आचरण मुझे अशाक्त और बैचेन कर रहा है। बीमा अधिकारी को बुलाया जाए ताकि मैं मेरे इस बीमा पालिसी को रद्द करा दूं।

बीमा एजेन्ट को बुलाया गया। एजेन्ट ने कहा – आप तो पैसा ले लीजिए, ऐसा तो जीवन में होता रहता है, कागजी कार्यवाही पूरी है।

नील माधवजी ने कहा – मुझे तब तक शान्ति नहीं मिलेगी जब तक मेरा बीमा रद्द नहीं करेगें क्योंकि मैंने जीवन में कोई पाप नहीं किया है, यह पाप मुझसे कैसे हो गया, समझ में नहीं आ रहा। अन्ततः बीमा रद्द कर दिया गया। नील माधव जी ने शान्ति का अनुभव किया और देखते ही देखते प्राण त्याग दिए।

– सौ. से. श्री राजेन्द्र व्यास, उज्जैन

जन विश्वास का महत्व

सुप्रसिद्ध चीनी दार्शनिक कनफ्यूशियन से एक शिष्य ने प्रश्न किया – शासन प्रभावशाली किस प्रकार बनाया जा सकता है ?

दार्शनिक ने उत्तर दिया – पर्याप्त अन्न, अस्त्र–शस्त्र, जनता का विश्वास प्राप्त करके। शिष्य ने पुनः प्रश्न किया – यदि तीनों में से किसी एक का त्याग करना पड़े तो किसे छोड़े ?

अस्त्र–शस्त्र को दार्शनिक ने कहा। और यदि शेष दोनों में से किसी एक का त्याग करना पड़े तब।

कनफ्यूशियन गंभीर हो गए, फिर बोले, ऐसी स्थिति में भोजन का त्याग करें। परन्तु भोजन के अभाव में कुछ लोग मरेगें।

शिष्य ने पूछा – यदि जनता का विश्वास त्याग दें तो कैसा रहे ?

दार्शनिक ने एक क्षण सोचे बिना उत्तर दिया, ऐसी स्थिति में सर्वनाश हो जाएगा। कोई भी शासन, भोजन और अस्त्र–शस्त्र के अभाव में चल सकता है कुछ दिन, परन्तु जन विश्वास के समाप्त होने पर एक पल भी शासन नहीं टिक सकता।

इसलिए जनविश्वास सर्वोपरि है, जनविश्वास शासन की आत्मा है।

(ज्योतिपथ – सत्पसद आर्य)

महर्षि दयानन्द

0 एक दिन स्वामी चले जा रहे थे। सामने से एक सॉड़ आ रहा था। वह मरखना था। लोगों ने स्वामी जी को हट जाने के लिये कहा पर स्वामी जी सीधे चलते रहे। सॉड़ ने स्वामी जी को देखा तो वह रास्ता छोड़कर पीछे हट गया। जनता आश्चर्यचकित हो उठी। फिर बोली कि यदि सॉड़ मारने लगता तब क्या करते। स्वामी जी ने कहा कि मैं उसके सींग पकड़कर एक ओर कर देता।

0 स्वामीजी यहां से पुनः रामघाट होकर काशी पधारे। काशी नरेश को पुनः स्वामीजी के आगमन की सूचना मिली। स्वामीजी को लेने गाड़ी आई। तब स्वामीजी नरेश से मिले। नरेश ने स्वामीजी का बड़ा स्वागत किया। श्रद्धाभक्ति पूर्वक सिंहासन पर बैठाया। पीछे मूर्ति पूजा के विषय पर आपकी अवज्ञा हो गई थी अतः क्षमा करें, आप सन्यासी हैं। स्वामीजी बोले। उसका मेरे मन में लेशमात्र भी मलाल नहीं है काशी नरेश ने उचित भेंट व सत्कार के साथ स्वामीजी को विदा किया।

0 स्वामीजी काशी से मुगलसराय आये तो वहां कुछ बंगाली रेल कर्मचारियों ने उनसे कलकत्ता चलने की प्रार्थना की।

जमालपुर स्टेशन पर स्वामीजी मुंगेर जाने वाली गाड़ी की प्रतीक्षा में थे। वे प्लेटफार्म पर टहलने लगे। गाड़ी में एक घण्टा शेष था। उस समय वहां एक अंग्रेज इंजीनियर पत्नि सहित खड़ा था। उसकी पत्नि ने स्वामीजी को नंगा देखकर बुरा मनाया। इंजीनियर महाशय ने तुरन्त ही स्टेशन मास्टर को बुलाकर कहा कि यह कौन नंगा आदमी टहल रहा है। इसे इधर घूमने से मना करो। स्टेशन मास्टर ने स्वामीजी से अति विनीत भाव से कहा कि भगवान आप दूसरी ओर चलकर कुर्सी पर बैठ जायें। गाड़ी में अभी देर है।

स्वामीजी पहले ही उसके भाव समझ गए थे। अतः स्वामीजी ने उससे कहा कि जिसने तुम्हें भेजा है उससे कहो कि हम उस युग के पुरूष हैं जिस युग में बाबा आदम और माता हव्वा अदन के उद्यान में नंगे घूमने में किंचित भी लज्जा न करते थे। स्वामीजी ने टहलना जारी रखा। इंजीनियर ने फिर बाबू को बुलाकर फिर हटाने को कहा। परन्तु बाबू ने कहा कि यह कोई भिखमंगा साधूं नही है जिसे मैं निकाल दूं। वह हमें या आप जैसों को कुछ नहीं समझता है, एक स्वतन्त्र साधू है। इंजीनियर को जब पता चला कि यह साधू स्वामी दयानन्द सरस्वती हैं, वह यह सुनकर आश्चर्य में पड़ गया और उसने पास जाकर स्वामी जी को प्रणाम किया। फिर कहा कि चिर काल से आपके दर्शनों की इच्छा थी। मेरा सौभाग्य है कि आपके दर्शन हो गये हैं। गाड़ी आने पर स्वामी जी मुंगेर चले गये।

कमश.....

एक दृष्टि में मनुष्य

ये बदलती दुनियॉ
पता नहीं जायेगी कहॉ ?
चिन्ता में डूबा है आज सारा जहॉ।

पशु पक्षियों की एक महती सभा हो रही थी।
जनता मानवीय अत्याचारों पर रो रही थी।।

विषय था, आदमी हमारी पहचान पर अतिक्रमण कर रहा है,
हर पशु पक्षी, इससे डर रहा है।।

इसलिए, गंभीरता से लोमड़ी बोली,
विषय पर जबान खोली।
ये आदमी अपनी पहचान और कद हमसे बढ़ाता है,
तारीफ करने में उदाहरण हमारा ही बताता है।।

वीरता की मिसाल शेर से, नामों में सिंह धरता है।
तेज दौड़ने और ऑख की खूबसूरती की तुलना हिरण से करता है।

मीठी आवाज कोयल सी बताकर
शरीर बड़प्पन हाथी सा दिखाकर
अपनी तारीफों के कसीदे बुनता है
हम पशु पक्षियों के गुण बड़ी खुशी से गिनता है।

आदतों में भी अपनी परिवर्तन ला रहा
आदमी आज हमारी श्रेणी में आ रहा।

चापलूसी में भाई कुत्ते को पीछे छोड़ा है,
धोखा देने में तो मेरा भी रेकार्ड तोड़ा है।

स्वार्थ में ऑख मूंदकर चल रहा।
उल्लू जी की श्रेणी में ही पल रहा।।

गिद्ध सी लालची दृष्टि इसमें समायी है,
गन्दगी में भी कौवे सी वृत्ति पायी है।

जहर तो इसमें सांप से ज्यादा पाया जाता है,
आस्तिन का सांप इसे कहा जाता है।

चीड़े सी भोगवृत्ती में ही डूबा है,
रात–दिन विलासिता को ही भोगा है।।

हमारी, इतनी समानता आज का आदमी अपने में ला रहा है
आदमियत छोड़ हमारी ओर आ रहा है।

पर इतने पर भी वह बड़ा कहलाता है,
और हमारा नंबर दोयम दर्जे पर आता है।
ये तो सरासर ना इंसाफी और पक्षपात है,
पूछो भगवान से किस मायने में आदमी की हमसे बड़ी जात है।।

ये भेदभाव मिटना जरूरी है,
वर्ना अगला कदम मजबूरी है
आज इसने तो अपनी पहचान खो और हमारी ओर आ रहा है,
इससे हमारे अस्तित्व पर आज खतरा बढ़ता जा रहा है।
इस तरह तो हमारी कौम बदनाम हो जायेगी,
आदमी की तरह ही आदतें हममे आयेंगीं।

इसलिए प्रस्ताव करते हैं–आदमी, मानवीय सीमायें न तोड़े,
अपने को पशु–पक्षी से न जोड़ें,
संसार की श्रेष्ठ योनी का क्यों कर रहा तिरस्कार,
अकल दे भगवान इसे, करे अपनी करनी पर विचार।
वर्ना, ये बदलती दुनिया पता नहीं जायेगी कहॉ,
चिन्ता में डूबा है आज सारा जहॉ।

– प्रकाश आर्य, महू

प्रिय पाठकवृन्द,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका का सम्पादन किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए। समयावधि पूर्ण होने पर अपनी सहयोग राशि कृपया भेजें।

विशेष–बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

न्यूजीलैण्ड – आस्ट्रेलिया – फिजी यात्रा

– प्रकाश आर्य

भारत में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित सन् 2006 के अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में विश्व की आर्य समाजों को गति देने, विश्व की सभी आर्य समाजों को संगठित करने की दृष्टि से भारत के बाहर भी आर्य महासम्मेलन करने की योजना बनाई थी। वैसे तो यह योजना बहुत पूर्व बनी थी तथा 1927 से प्रारंभ हो गई थी, अपरिहार्य कारणों से बीच में यह क्रम रूक गया था।

किन्तु पुनः यह निर्णय लिया तथा 2006 में तत्कालीन सभा प्रधान कैप्टन देवरत्न जी आर्य व उनके पश्चात आचार्य बलदेवजी के नेतृत्व में यह क्रम निरन्तर चल रहा है। 2006 में भारत, फिर अमेरिका, मॉरीशस, सूरीनाम, हालैण्ड, फिर 2012 में भारत, दक्षिण अफ्रिका, सिंगापुर, बैंकॉक, थाईलैण्ड में सम्पन्न हो चुके, अब 27, 28, 29 नवम्बर 2015 को आस्ट्रेलिया में होने जा रहा है।

उसी सन्दर्भ में ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड तथा फिजी देश की अनेक आर्य समाजों, आर्यजनों से चर्चा करने तथा संगठित होकर सम्मेलन को भव्य स्वरूप देने की भावना से इन देशों की यात्रा की गई। इसमें मैं, तथा श्री विनय आर्य और सिडनी से श्री योगेशकुमार आर्य आस्ट्रलिया द्वारा इन देशों में जनसम्पर्क किया गया। श्री योगेश आर्य को इस सम्मेलन का संयोजक बनाया गया है।

मैं 1/5/2015 की रात्रि में दिल्ली पहुंचा। दिनांक 2/5/2015 को दिल्ली से रवाना, प्रातः 10.30 पर सिंगापुर जेट एयरवेज से, 6.30 बजे सिंगापुर पहुंचे, सिंगापुर से 7.35 बजे सिडली के लिए रवाना हुए, सुबह 6.30 बजे सिडनी पहुंचे।

सिडनी से सुबह 9 बजे आकलैण्ड (न्यूजीलैण्ड) हेतु रवाना हुए। आकलैण्ड में शाम को करीब 6 बजे पहुंचे, वहां आर्य समाज के कार्यकर्ताओं की बैठक थी।

वहां पहुंचकर सत्संग किया, जिसमें यज्ञ–प्रवचन व भजन का आयोजन किया गया था, जो हम लोगों द्वारा सम्पन्न करवाया गया। फिर रात्रि 10 बजे तक बैठक व पश्चात भोजन हुआ।

(आकलैण्ड में बर्फीली हवा व बहुत अधिक ठण्ड थी)

2 रात्रि श्री प्रकाश जी राय, जो एक बड़ी सूझबूझ वाले तथा कर्मठ व्यक्ति हैं, उनके निवास पर ठहरे। इस बीच आर्य महा सम्मेलन को लेकर तीन बैठकें हुई, इसके पश्चात कुछ देर आकलैण्ड को देखने गए, आकलैण्ड बहुत बड़ा तो नहीं है, किन्तु सुन्दर बसा है।

यहां के व्यक्तियों के व्यवहार बड़े अच्छे हैं। चर्चा के पश्चात सम्मेलन के प्रति सबमें जागरूकता आई। कई सुझाव दिए तथा आस्ट्रेलिया के साथ पूर्ण सहयोग करने का आश्वासन दिया।

5/5/2015 की सुबह 6 बजे आकलैण्ड से मेलबर्न (आस्ट्रेलिया) रवाना हुए। वहां पहुंचते ही दिनेशफल आर्य समाज के प्रधान हमें लेने आए। वे हमें भारतीय मूल निवासी आदित्य के यहां ले गए, वहीं तीन दिन ठहरे। शाम को आर्य समाज में बैठक का आयोजन था। वहां यज्ञ, भजन, प्रवचन के पश्चात आर्य महासम्मेलन के संबंध में बैठक रखी गई। काफी देर इस विषय पर तथा आर्य समाज के संगठन को लेकर एक सार्थक चर्चा हुई, बैठक में अच्छी उपस्थिति थी।

दूसरे दिन थोड़ा भ्रमण किया और शाम को फिर पण्डित प्रशान्त के यहां चर्चा रखी गई। तीसरे दिन दिनांक 8/5/2015 शाम को दिनेशफल जी के यहां बैठक रखी और लम्बे समय तक आर्य समाज के संगठन व महासम्मेलन पर चर्चा हुई। अनेक प्रश्न–उत्तर पूछे, कई शंकाएं संगठन को लेकर थी उनका निवारण हुआ। सभी ने सम्मेलन में पूरा–पूरा सहयोग करने का आश्वासन दिया सहयोग के लिए आस्ट्रेलिया आर्य प्रतिनिधि सभा को 3,000/– डालर भी प्रारंभिक सहयोग के रूप में दिए।

यहां आर्य समाज का भवन नहीं है, चर्चा के पश्चात एक उत्साह वर्धक वातावरण बना और इस हेतु शीघ्र ही भवन बनाने की योजना बनी।

दिनांक 8/5/2015 की सुबह ब्रिसबेन के लिए रवाना हुए। लगभग 11.30 बजे वहां पहुंचे, हवाई अड्डे पर लेने के लिए आर्य समाज प्रधान श्री एस. डी. सिंह आए। वहां से वे श्री सुखबीर सिंहजी के घर ले गए। शाम को आर्य समाज का सत्संग व सम्मेलन चर्चा होनी थी। यहां आर्य समाज का अपना भवन है और तीन एकड़ भूमि रिक्त पड़ी है, शहर के पास ही यह स्थित है। लगभग 80–90 व्यक्ति एकत्रित हुए थे। यज्ञ, भजन, प्रवचन के पश्चात महासम्मेलन की विस्तृत चर्चा हुई। सभी में बहुत उत्साह देखा गया। यहां के सदस्य सम्पन्न और बड़े कर्मठ तथा संगठित हैं। भवन के आगे बड़ा निर्माण करने की योजना बनी है।

सभी ने सम्मेलन के सहयोग का आश्वासन दिया तथा अच्छी मात्रा में धन का सहयोग करने का भी आश्वासन दिया।

दूसरे दिन प्रातः फिर श्री सुखबीर सिंह जी के निवास पर बैठक आयोजित की। प्रातः बैठक में प्रमुख व्यक्ति उपस्थित हुए, सम्मेलन की विस्तृत चर्चा की गई, कई सुझाव भी दिए और सभी ने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। इसके पश्चात दोपहर ब्रिसबेन से सिडनी हेतु रवाना हुए।

दिनांक 9/5/2015 को सिडनी पहुंचे, श्री योगेशजी आर्य के निवास पर रूके, सिडनी आर्य समाज द्वारा शहर से करीब 25 कि. मी. दूर एक विस्तृत स्थान 5 एकड़ का खरीदा है। उसमें आर्य समाज भवन बनाया है जिसमें करीब 200

व्यक्तियों के बैठने की व्यवस्था है। स्थान बड़ा सुन्दर और खुला है। वहां सत्संग हुआ और उसके पश्चात भजन और प्रवचन करवाए। सम्मेलन के संबंध में जानकारी दी। श्री विनय आर्य ने सम्मेलन के अतिरिक्त सार्वदेशिक सभा वर्तमान में क्या कर रही है, आगे क्या करना है, इस संबंध में जानकारी दी।

सम्मेलन के संबंध में एक अच्छा वातावरण बना, सभा के प्रधान श्री जगदीशजी व उपप्रधान श्री प्रमोदजी राय, मन्त्री तथा कार्यकर्ताओं ने इस सम्मेलन को भव्य बनाने का संकल्प लिया।

दिनांक 11/5/2015 की रात्रि में फिर एक बैठक सम्मेलन को लेकर आयोजित की। इसमें युवा संगठन को तथा अन्य सनातनधर्मी (पौराणिकों) तथा विश्व हिन्दू परिषद के डॉ. निहालसिंह भी उपस्थित हुए थे। जिसमें नवयुवक भी उपस्थित हुए थे।

युवा सम्मेलन का विचार किया गया। सभी इस आयोजन के प्रति अति उत्साहित हुए।

दिनांक 12/5/2015 की प्रातः फिजी के लिए रवाना हुए फिजी में सायं करीब 7 बजे पहुंचे, वहां से सुवा जो फिजी के एक छोर पर बसा है, वहां पहुंचे।

फिजी में नादी एयरपोर्ट पर उतर कर बस द्वारा सुवा पहुंचे, करीब 260 कि. मी. की दूरी 4.30 मिनिट में पूरी की।

वहां डॉ. राधवा हमें लेने आए थे वहां से आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय, जो केन्द्रिय कार्यालय है, गए। रात्रि करीब 7.30 बजे वहां पहुंचे, बैठक वहीं रखी गई थी। करीब 10 बजे तक बैठक चली। बैठक में वहां के पदाधिकारी और पण्डित तथा पण्डिताओं ने भाग लिया। प्रमुख रूप से श्री भुवनदासजी जो काफी सक्रिय व वरिष्ठ हैं तथा सभा के प्रचारक पण्डित गुरूदत्त जी, डॉ. राधवा आदि उपस्थित थे।

संभवतः वर्षों पश्चात फिजी सभा की सार्वदेशिक सभा से इस प्रकार गंभीर व विस्तृत चर्चा हुई। सार्वदेशिक की वर्तमान गतिविधि व आगामी योजना पर सभी ने वहां आश्चर्य व हर्ष व्यक्त किया।

सम्मेलन को सफल बनाने हेतु सभी ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सहयोग देने का पूर्ण आश्वासन दिया।

इसी यात्रा के मध्य आर्य नेता कमलेशजी आर्य से उनकी व्यस्तता और समयाभाव के कारण भेंट नहीं हो सकी, यद्यपि श्री कमलेशजी स्वयं इस हेतु एयरपोर्ट पधारे थे किन्तु ठीक से जानकारी न होने के कारण भेंट न हो सकी। किन्तु फोन पर लम्बी चर्चा हुई, उन्होंने पूरी तरह सम्मेलन की सफलता हेतु आश्वस्त किया।

दिनांक 13/5/2015 को प्रातः अपनी कार में फिजी सुवा स्थित स्कूल, कॉलेज, बालघर दिखलाए। फिजी में देखकर इतना कुछ होना आश्चर्य ही लग रहा था। करीब 35 संस्थाएं आर्य समाज द्वारा रन की जा रही हैं।

फिजी अत्यन्त शान्त प्राकृतिक सुन्दरता से पूर्ण समुद्र, पहाड़, हरियाली की सुन्दरता का बेमिसाल उदाहरण है। सभी सदस्य सौम्य व सहयोगी प्रवृत्ति के लगे।

यद्यपि इस यात्रा का समय 14 दिवस था लम्बी यात्रा थी किन्तु यह भी बहुत कम रहा।

वहां के आर्यों से मिलकर वहां की स्थिति को जब जाना तो लगा कि सार्वदेशिक का संगठनात्मक यह कार्य बहुत पहले से प्रारंभ हो जाना था। यदि ऐसा हुआ होता तो आज विदेशों में आर्य समाज की अपनी पहचान होती।

यात्रा अत्यन्त व्यस्त जिसमें कई दिनों की नींद भी 2 से 3 घण्टे तक रही, थका देने वाली रही, परन्तु सार्थक रही। एक दिन में 2 से 4 मिटिंग हुई। कई सौ व्यक्तियों से मिलें। कुछ स्वास्थ्य पर भी प्रभाव हुआ।

जहां–जहां गए वहां से संगठन के प्रति विश्वास, नया उत्साह का वातावरण निर्मित हुआ। नई आर्य समाजों की स्थापना का भी आश्वासन दिया। उन्हें जिस मार्गदर्शन व सहयोग की अपेक्षा थी वह उन्हें मिला, बड़े संगठन के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने का आश्वासन उनसे हमें मिला। कई अच्छे कर्मठ आर्यजनों से सम्पर्क हुआ, जो संगठन हित में रहेगा। एक–दूसरे को समझने का अवसर मिला विश्वास बढ़ा।

भारत में सम्मेलन को देख वहां अनेक सदस्य दुविधा में थे कि वे इतना बड़ा कार्य कैसे कर सकेगें। उन्हें किसी बड़े कार्यकम का अनुभव नहीं था। चाहते हुए भी सम्मेलन करने, न करने की दुविधा मं थे। किन्तु विस्तृत चर्चा व मन में उठे प्रश्नों की शंका समाधान और सार्वदेशिक सभा के द्वारा सहयोग व मार्गदर्शन की चर्चा से उनमें आत्म विश्वास का संचार हुआ। सभी सदस्य सम्मेलन के लिए पूर्ण मन से जुट गए। यह यात्रा आर्य समाज के लिए एक अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध हुई।

श्री योगेश कुमार आर्य का पूरे 14 दिन साथ रहते हुए, अत्यन्त सराहनीय सहयोग रहा।

निश्चित रूप से आस्ट्रेलिया में आयोजित यह सम्मेलन न केवल आस्ट्रेलिया अपितु न्यूजीलैण्ड और फिजी देशों के लिए भी चेतना प्रदान करने वाला होगा।

यही **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** की ओर बढ़ते कदमों का एक प्रयास है।

कृपया प्रचार कार्य में सभा के सहयोगी बनें।

सभा के कार्य को गति तभी मिलेगी जब हम सब सक्रिय रहेगें, समाजों से निरंतर सम्पर्क बनाए रखेगें। इस समय सभा की ओर से 5 प्रचारक, 4 आर्यवीर दल प्रशीक्षक (पूर्ण कालिक) तथा दो वाहन सभा कार्य में निरंतर लगे हैं। समाजों में भ्रमण, साहित्य प्रकाशन भी किया जा रहा है। इन कारणों से मासिक व्यय पूर्व की अपेक्षा काफी मात्रा में बढ़ गया है। इसका संगठन को लाभ भी हो रहा है पुरानी नि क्रय अनेक समाजों में जाग्रती आई है, नई समाज की स्थापना हुई है, वैदिक साहित्य हजारों हाथों में पहुंचा है। थोडा थोडा सहयोग अपनी ओर से, अपने परिचितों से या समाज की ओर से अपना कर्तव्य समझ कर करें तो कार्य को और गति मिलेगी।

इसलिएं सभा की स्थायी आय बढ़ाने के लिए आर्यजन प्रतिवर्ष अपनी स्वेच्छा से निरन्तर सभा को सहयोग करें, यह योजना बनाई है। सभा की आय बढ़ेगी तो प्रचार कार्य भी बढ़ेगा। अतः आपका सहयोग भी इस पवित्र कार्य में होना चाहिए। कुछ महानुभावों ने अपनी स्वीकृति प्रदान की है, उनके नाम निम्नानुसार हैं –

वार्षिक सहयोगी सदस्य –

1.	श्री इन्द्रप्रकाश गांधी, शिवपुरी	1100/–
2.	श्री प्रकाश आर्य, महू	1100/–
3.	श्री राधेश्याम बियाणी, महू	1100/–
4.	श्री ओमप्रकाश आर्य, महू	1100/–
5.	श्री अश्विनी शर्मा, महू	1100/–
6.	श्री श्रीधर गोस्वामी, महू	1100/–
7.	श्री रामलाल प्रजापति, महू	1100/–
8.	श्री अरूणजी आर्य, राऊ	1100/–
9.	श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, उज्जैन	1100/–
10.	श्री वेदप्रकाश आर्य, उज्जैन	1100/–
11.	श्री लक्ष्मीनारायणजी, मौलाना	1100/–
12.	श्री रमेश पाटीदार, मौलाना	1100/–
13.	श्री जगदेवसिंह पंड्या, मौलाना	1100/–
14.	श्री दिनेश गुप्ता, इन्दौर	1100/–
15.	श्री प्रतापसिंह आर्य, इन्दौर	1100/–
16.	श्री भगतसिंह आर्य, आगर–मालवा	1100/–
17.	श्री वेदरत्न आर्य, इन्दौर	1100/–

इस हेतु संकल्प पत्र का प्रारूप दिया गया है, उस अनुसार संकल्प पत्र भरकर प्रेषित करें।

अन्तरंग सभा सम्पन्न

दिनांक 29/4/2015 को एक आवश्यक अन्तरंग बैठक आर्य समाज मन्दिर उज्जैन में सम्पन्न हुई। बैठक में अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर निर्णय लिए गए जिनमें मुख्य रूप से संगठनात्मक और प्रचार कार्य वृद्धि पर विशेष चर्चा होकर निर्णय लिए गए। आगामी माह 27–28 जून 2015 में वार्षिक अधिवेशन करने का निर्णय लिया।

वर्ष 2016 में होने वाले सिंहस्थ पर आर्य समाज की ओर से भव्य व आकर्षक कार्यक्रम की योजना बनाई गई।

प्रान्त की सभी संभाग के उपप्रधान, उपमन्त्री, कार्यकारिणी के अन्तरंग सदस्यों के अतिरिक्त प्रत्येक संभाग के प्रमुख कार्यकर्ताओं को इस कार्य की सफलता हेतु जोड़ा गया है।

इस बार का आयोजन अभूतपूर्व और करोड़ों व्यक्तियों तक आर्य समाज का सन्देश पहुंचाने वाला होगा। इस हेतु अभी से प्रयास प्रारंभ कर दिए गए हैं।

सिंहस्थ में कार्यक्रम हेतु अपील

आगामी वर्ष 2016 के माह अप्रेल में उज्जैन में सिंहस्थ मेला प्रारंभ हो रहा है। इस मेले में करोड़ों की संख्या में सनातन धर्मी श्रद्धालु आते हैं। वेद प्रचार व आर्य समाज के सम्पर्क का इससे बड़ा अवसर प्राप्त होना असंभव है।

यदि आर्य समाज की ओर से प्रभावी, आकर्षक और व्यवस्थित प्रचार किया जावे तो करोड़ों–करोड़ों जन तक हम अपनी बात पहुंचा सकते हैं।

यह हम आर्यों के लिए एक सुनहरा अवसर है, इसका लाभ उठाना चाहिए।

इसलिए आप सभी आर्यों का शारीरिक, मानसिक और आर्थिक सहयोग अत्यन्त आवश्यक है।

अतः निवेदन है कि इस अवसर को एक ऐतिहासिक उपलब्धि बनाने हेतु संकल्प लीजिए। अपने विचार, कार्यक्रम व्यवस्था हेतु समय दान, और आर्थिक सहयोग की सूचना कृपया **आर्य समाज, नई सड़क, उज्जैन** के पते पर भेजें।

विनीत :

प्रकाश आर्य सभामन्त्री		**इन्द्रप्रकाश गांधी** सभाप्रधान
लक्ष्मीनारायण आर्य कार्यक्रम संयोजक	**वेदप्रकाश आर्य** कार्यक्रम कोषाध्यक्ष	**ओमप्रकाश अग्रवाल** कार्यक्रम संवरक्षक

आर्य समाज खाचरौद में कार्यक्रम सम्पन्न

आर्य समाज खाचरौद में पहलीबार कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिदिन हजारों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम अभूतपूर्व रहा।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता श्री प्रकाश आर्य, महू, आचार्य अखिलेश शर्मा, लातूर, ब्रह्मचारिणी प्रियंका आर्या, राजस्थान एवं भानुप्रकाश शास्त्री, बरेली थे।

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा चतुर्वेदी प्रिन्टर्स, इन्दौर से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक – प्रकाश आर्य, महू

AMIT # 98262-71002